पाठ 8: भौगोलिक क्षेत्र कैसे पावन होते हैं?

प्रश्न और क्रियाकलाप

प्रश्न 1. प्रसिद्ध पर्यावरणविद डेविड सुजुकी के कथन से आप क्या समझते हैं? इससे हमारे चारों ओर विद्यमान वायु, जल, भूमि, वृक्ष तथा पर्वत के प्रति हमारे व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर:

- इस कथन का अर्थ है कि हमें प्रकृति को केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार मानना चाहिए।
- यदि हम प्रकृति को सम्मान और श्रद्धा की दृष्टि से देखेंगे, तो उसका संरक्षण करेंगे।
- वायु, जल, भूमि, वृक्ष और पर्वत हमारे जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।
- इनके प्रति सम्मान की भावना हमें पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रेरित करती है।
- इससे प्रदूषण कम करने, वृक्ष लगाने और प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करने की प्रेरणा मिलती है।

प्रश्न 2. अपने क्षेत्र के पावन स्थलों की सूची बनाइए। पता लगाइए कि ये स्थल पावन क्यों माने जाते हैं? क्या इनसे जुड़ी कोई कहानियाँ हैं? इस विषय में 150 शब्दों में एक संक्षिप्त लेख लिखिए।

उत्तर: मेरे क्षेत्र में कई पावन स्थल हैं, जैसे मंदिर, गुरुद्वारा और ऐतिहासिक धार्मिक स्थल। ये स्थान लोगों की आस्था और श्रद्धा के केंद्र हैं। माना जाता है कि इन स्थलों का संबंध किसी संत, देवी-देवता या ऐतिहासिक घटना से है।

इन स्थानों से जुड़ी अनेक लोककथाएँ और धार्मिक मान्यताएँ प्रचलित हैं। लोग यहाँ पूजा-अर्चना करने, मन की शांति प्राप्त करने और आशीर्वाद लेने आते हैं। विशेष अवसरों पर मेलों और धार्मिक आयोजनों का भी आयोजन किया जाता है।

ये पावन स्थल केवल धार्मिक महत्व ही नहीं रखते, बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक परंपराओं को भी मजबूत बनाते हैं। इसलिए लोग इनका सम्मान करते हैं और उनकी देखभाल करते हैं।

प्रश्न 3. आपके विचार में प्राकृतिक तत्व जैसे- नदी, पर्वत और वन आदि लोगों के लिए पावन क्यों माने जाते हैं? वे हमारे जीवन में किस प्रकार योगदान देते हैं?

उत्तर:

- नदियाँ हमें जल प्रदान करती हैं।
- वन शुद्ध वायु, लकड़ी, औषधियाँ और वन्यजीवों का आश्रय प्रदान करते हैं।
- पर्वत नदियों के स्रोत होते हैं और जलवायु को प्रभावित करते हैं।
- ये सभी प्राकृतिक तत्व जीवन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- इसी कारण लोग इन्हें पावन मानते हैं और उनका सम्मान करते हैं।

प्रश्न 4. लोग तीर्थ या अन्य पावन स्थलों की यात्रा क्यों करते हैं?
उत्तर:
- धार्मिक आस्था और श्रद्धा व्यक्त करने के लिए।
- आध्यात्मिक शांति प्राप्त करने के लिए।
- धार्मिक अनुष्ठानों और पूजा में भाग लेने के लिए।
- ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को जानने के लिए।
- परिवार और समाज के साथ जुड़ाव बढ़ाने के लिए।

प्रश्न 5. प्राचीन तीर्थयात्रा मार्गों ने उस समय किस प्रकार व्यापार को प्रोत्साहित किया? आपके अनुसार ये पावन स्थल उन क्षेत्रों के आर्थिक विकास में किस प्रकार सहायक बने?
उत्तर:
- तीर्थयात्रियों के आवागमन से व्यापार बढ़ा।
- मार्गों पर बाजार, सराय और विश्राम गृह विकसित हुए।
- स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर मिले।
- हस्तशिल्प, भोजन और अन्य वस्तुओं की बिक्री बढ़ी।
- इससे आसपास के क्षेत्रों का आर्थिक विकास हुआ।

प्रश्न 6. पावन स्थल किस प्रकार वहाँ के लोगों की संस्कृति और परंपरा को प्रभावित करते हैं?
उत्तर:
- पावन स्थल धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र होते हैं।
- त्योहारों, मेलों और धार्मिक आयोजनों का आयोजन होता है।
- लोकगीत, नृत्य और परंपराएँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ती हैं।
- लोगों में सामाजिक एकता और सहयोग की भावना विकसित होती है।
- स्थानीय संस्कृति और पहचान को संरक्षण मिलता है।

MUKUTclasses

प्रश्न 7. भारत के विविध प्रकार के पावन स्थलों में से अपनी रुचि के अनुसार किन्हीं दो का चयन कीजिए तथा उनका महत्व बताते हुए एक परियोजना बनाइए।

उत्तर:

परियोजना: भारत के दो प्रमुख पावन स्थल

1. वाराणसी (उत्तर प्रदेश)
- गंगा नदी के तट पर स्थित।
- हिंदू धर्म का प्रमुख तीर्थ स्थल।
- काशी विश्वनाथ मंदिर के लिए प्रसिद्ध।
- धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व का केंद्र।

2. अमृतसर (पंजाब)
- स्वर्ण मंदिर के लिए प्रसिद्ध।
- सिख धर्म का सबसे पवित्र तीर्थ स्थल।
- यहाँ प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु आते हैं।
- सेवा, समानता और भाईचारे का संदेश देता है।

निष्कर्ष: दोनों स्थल भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता के महत्वपूर्ण प्रतीक हैं।

प्रश्न 8. तीर्थयात्राएँ किस प्रकार दोहरा महत्व रखती हैं?

उत्तर:

- तीर्थयात्राओं का धार्मिक महत्व है क्योंकि लोग पूजा, प्रार्थना और आध्यात्मिक शांति के लिए यात्रा करते हैं।
- इनका सामाजिक और आर्थिक महत्व भी है क्योंकि इससे लोगों के बीच संपर्क बढ़ता है और स्थानीय व्यापार को प्रोत्साहन मिलता है।
- इस प्रकार तीर्थयात्राएँ धार्मिक तथा सामाजिक-आर्थिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं।

To get notes visit our website

mukutclasses.in

MUKUTclasses